# नया ज्ञानोदय

दिसम्बर 2024–जनवरी 2025
मूल्य : 50 रुपये

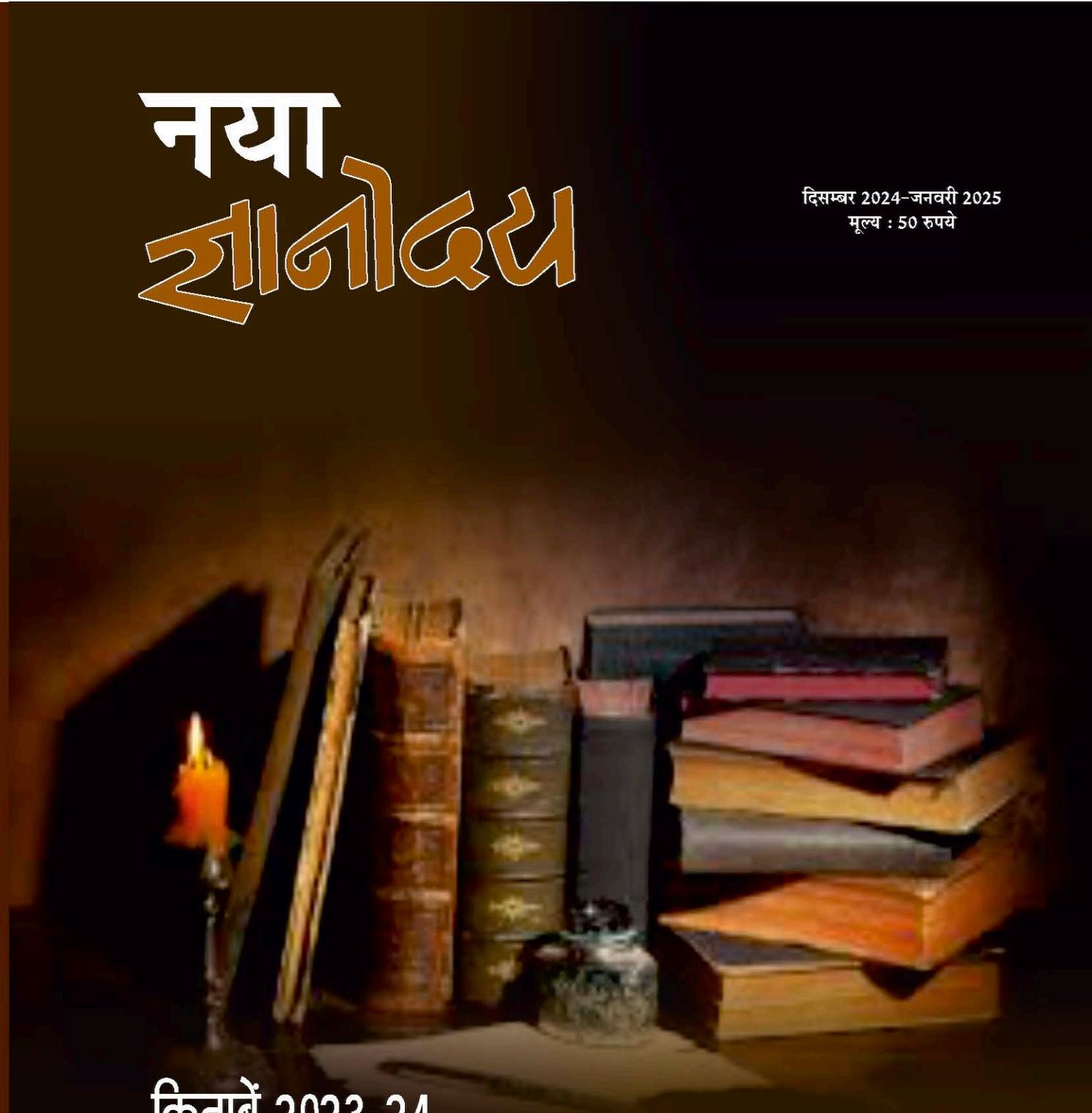

## किताबें 2023-24

# लेखा-जोखा

भारतीय ज्ञानपीठ

# भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन


# नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति
और कलाओं पर केंद्रित

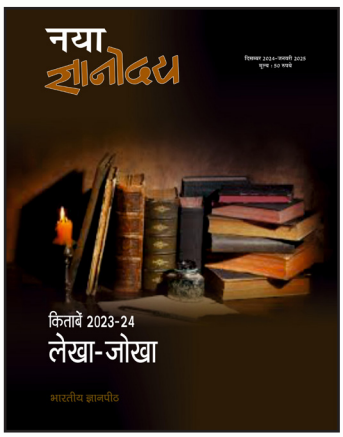





अंक : 230
दिसम्बर 2024-जनवरी 2025

सम्पादक
**मधुसूदन आनन्द**

सह-सम्पादक
**महेश्वर, प्रभाकिरण जैन**

**साहू अखिलेश जैन**
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

**प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ**
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003
फोन : 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com
bookclub@jnanpith.net
gmbharatiyajnanpith@gmail.com

वेबसाइट : www.jnanpith.net

**Naya Gyanodaya**
A Literary Bi-monthly Magazine
Editor : Madhu Sudan Anand
Language : Hindi
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road,

मूल्य : 50
**50 रुपये + 10 रुपये (डाक खर्च)**

**व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए :**
वार्षिक (6 अंक) : 360 रुपये (डाक खर्च सहित)
वार्षिक (6 अंक) : 460 रुपये (डाक खर्च सहित)

नया ज्ञानोदय रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु डाक व्यय अतिरिक्त

**नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।**

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से उपर्युक्त पते पर भेजें।

(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)



© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।



आवरण व साज-सज्जा : महेश्वर, भीतरी रेखांकन : संदीप राशिनकर

**www.jnanpith.net**

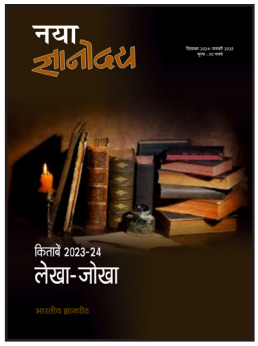


साहित्य, समाज, संस्कृति और
कलाओं पर केन्द्रित

अंक : 230
दिसम्बर 2024-जनवरी 2025
पृष्ठ : 84 (आवरण सहित)

www.jnanpith.net

# अनुक्रम

इंशा अल्ला ख़ाँ

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

महेश कटारे

विजय कुमार

कुलदीप कुमार

हारुकी मुराकामी

**लेखा-जोखा**

कथा-कहानी का साल : सुधांशु गुप्त / 04
कविता-संग्रहों का लेखा जोखा : अर्पण कुमार / 12
कथा से इतर भी और कथा का विस्तार भी : उमा शंकर चौधरी / 17
विष्णु नागर की कविताएं : विजय कुमार / 22
माधव कौशिक की ग़ज़लों में ग्रामीण संकट और संवेदना : दिव्या शुक्ला / 24

**कथेतर**

रानी केतकी की कहानी : इंशा अल्ला ख़ाँ / 28
खड़ी बोली-म्लेच्छभाषा : चंद्रधर शर्मा गुलेरी / 37
फिर बैतलवा डाल पर : विवेकी राय / 40
दीयों की रात : महेश कटारे / 43
शील परम भूषणम : हरिनाथ मिश्र / 45

**कविता**

कुलदीप कुमार / 54
स्वाति शर्मा / 56

**कैमरून की कहानी**

काठ की साइकिल : टिकुम अबाह अजोंगा / 57

**फ्रेंच कहानी**

द्वंद्व युद्ध : गी द मोपासाँ / 61

**रूसी कहानी**

प्रेम के बारे में : अन्तोन चेख़व / 64

**लातिन अमेरिकी कहानी**

वापसी : फ़र्नांडो सोरेंटीनो / 69

**जापानी कहानी**

शिनागावा बन्दर की स्वीकारोक्तियाँ : हारुकी मुराकामी / 72

ज्ञान गरिमा के 80 वर्ष
भारतीय ज्ञानपीठ

# कथा-कहानी का साल

## सुधांशु गुप्त

**सुधांशु गुप्त**

13 नवम्बर, 1962 को दिल्ली में जन्म। दिल्ली में ही पढ़ाई की और लगभग तीन दशक पत्रकारिता में गुज़ारने के बाद अब स्वतन्त्र लेखन। पत्रकारिता आजीविका रही और लेखन जीवन। सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ प्रकाशित। अनेक कहानियों का रेडियो से प्रसारण। लगभग 50 क्षेत्रीय, हिन्दी और विदेशी भाषाओं के साहित्यिक उपन्यासों का रेडियो रूपान्तरण। वीडियो के लिए भी अनेक धारावाहिक लिखे। 'ख़ाली कॉफ़ी हाउस', 'उसके साथ चाय का आख़िरी कप' और स्माइल प्लीज़ कहानी-संग्रह प्रकाशित।

**मो. 9810936423**

हम एक जटिल समय में जी रहें हैं-एब्सर्ड समय में। ऐसे समय में जहाँ धर्म निरपेक्ष होना, मनुष्य होना भी अपराध की तरह देखा जाता है, जहाँ अच्छे-बुरे, नैतिक-अनैतिक, झूठ सच की दूरियाँ ख़त्म हो रही हैं, जहाँ 'विवेकहीनता' को ही 'विवेक' मान लिया गया है। ऐसे समय में क्या पढ़ा जाए और क्या लिखा जाए, यह काम भी आसान नहीं रहा। ऐसे में पिछले साल के साहित्य का–कथा कहानी का मूल्यांकन और भी कठिन लगता है। यदि कहानी-संग्रहों की बात करें तो हर बार की तरह गये साल में भी सैकड़ों कहानी संग्रह प्रकाशित हुए और अपने-अपने स्तर पर प्रशंसित भी हुए। यहाँ 2024 और 2023 के अंतिम महीनों में आए कुछ कहानी संग्रहों को परखने की कोशिश होगी। देखते हैं किन संग्रहों में मौजूदा समय के ज़रूरी सवाल उठाए गए, कौन से संग्रह विमर्श की माँग करते हैं। काफ़्का की कहानी 'द मेटामोर्फोसिस' पढ़ने के बाद मार्खेज़ ने कहा था कि इस कहानी को पढ़ने के बाद मैंने जाना 'अलग से' लिखना संभव है। यह भी देखते हैं कि कौन से लेखक 'अलग से' लिख रहे हैः

'अन्तिम नीबू'-उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशनः यह संग्रह महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें उदय प्रकाश की 1967 में लिखी पहली कहानी 'बिजली का बल्ब और मौत का फ़ासला' के साथ ही अब तक लिखी अन्तिम कहानी 'अन्तिम नीबू' भी शामिल है। एक लेखक की 57 वर्षों की यात्रा को इस संग्रह में देखा जा सकता है। पन्द्रह साल की उम्र में लिखी पहली कहानी 'बिजली का बल्ब और मौत का फ़ासला' में उदय प्रकाश बेहद मासूमियत से रोशनी और मृत्यु के बीच की दूरियों को देखते हैं। कहानी में बिजली के खंभे से गिरकर फिटर की मृत्यु के दृश्य हमें आज भी दिखाई देते हैं। बाज़ार, वैश्वीकरण, उदारीकरण के दुष्प्रभाव उनकी कहानियों में अक्सर दिखाई देते हैं। 'आवरण' और 'रुक्कू' 21वीं सदी में नयी व्यावसायिक पूँजी से निर्मित मुक्त बाज़ार में परस्पर होड़ और प्रतिद्वन्द्विता के शिकार हो रहे नितांत आम लोगों की कहानियाँ हैं। रुक्कू एक घरेलू कामकाज करने वाली नौकरानी माया की कहानी है तो आवरण किताब के कवर डिजाइन करने वाले कलाकार और उस किताब के लेखक की त्रासद कथा है, जो कलादीर्घाओं और चित्रों की नीलामी वाले ग्लोबल बाज़ार में छिपी लोभ लालच की प्रवृत्तियों को उजागर करती है। इन कहानियों में अकादमिक तन्त्र की कड़वी सच्चाइयाँ हैं (आचार्य का कुत्ता) तो टूटते परिवारों, रिश्ते नातों, में बढ़ती अजनबियत भी है (जज साहब)। लेकिन संग्रह की शीर्षक कहानी-अन्तिम नीबू-पर कुछ बात करना ज़रूरी है। भारत में पहला लॉकडाउन 20 मार्च 2020 को लगा। तब तक सारी दुनिया इस वायरस के चपेट में आ चुकी थी। 2020 में ही उदय प्रकाश की यह कहानी इंडिया टुडे में प्रकाशित हुई। इसे उदय प्रकाश की जल्दबाज़ी माना जा सकता है कि उन्होंने तत्काल महामारी पर कहानी लिख दी। इसे यह भी माना जा सकता है कि कहानी की संरचना को तोड़ते हुए, सरहदों को लांघते हुए उदय प्रकाश किसी भी देश और काल में पहुँच जाते हैं। कहानी किस्से की तरह इस वाक्य से शुरू होती है-यह तब की बात है, जब ऐसा लगने लगा था कि अब इस पृथ्वी पर मनुष्य नामक जैविक प्राणी का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। कहानी में मनुष्य का मस्तिष्क,